Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2020, VOL- 7/57

तारक मेहता का उल्टा चश्मा : मिनी इंडिया

मीनाक्षी
सहायक प्रवक्ता, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

सोनी चैनल पर प्रसारित होने वाला हिंदी धारावाहिक तारक मेहता का उल्टा चश्मा भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत एक पारिवारिक धारावाहिक है । इसका निर्माण नीला आसित मोदी और आसित कुमार मोदी ने किया है । यह तारक मेहता के गुजराती उपन्यास "दुनिया ने ऊन्धा चश्मा" पर आधारित है, जो एक गुजराती साप्ताहिक अखबार चित्रलेखा के लिए लिखते थे। यह कहानी मुंबई के गोकुलधाम की है, जहां अलग-अलग जगह, संस्कृति और परंपराओं के लोग एक-दूसरे के साथ खुशी से रहते हैं। सीरियल में भारतीय समेकित संस्कृति ,मानवता और कॉमेडी पर जोर दिया जाता है। तारक मेहता एक भारतीय लेखक थे। यह मुख्यतः दुनिया ने ऊंधा चश्मा नामक गुजराती भाषा में एक लेख लिखने के कारण जाने जाते हैं। उन्होंने कई प्रकार के हास्य, कहानी आदि का गुजराती में अनुवाद किया।

पिछले 18 सालों से यह सीरियल लोगों के दिलों पर राज करता हुआ आ रहा है । इतने लंबे समय तक चलने वाला ये इस तरह का पहला टीवी शो है। टीवी पर धारावाहिक की टी आर पी में ये शो अक्सर टॉप फाइव में शामिल रहता है, सोशल मीडिया पर छाया रहता है। सोशल मीडिया कैरेक्टर से जुड़े मीम को काफी शेयर किया जाता है। ये शो कई मायने में लोगो के लिए खास है ।

सबसे पहले बात करते हैं गोकुलधाम सोसायटी और यहां रहने वाले लोगों की । यहां के लोग गोकुलधाम को 'मिनी इंडिया' कहते हैं क्योंकि यहां भारतीय संस्कृति के सभी रंगों से संबंधित परिवार रहते हैं। यहां मराठी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, तमिल आदि सभी संस्कृति से संबंधित परिवार एक साथ मिलकर रहते हैं, एक दूसरे की देखभाल और फिक्र करते हैं, देखकर कोई नहीं कह सकता कि ये एक परिवार नहीं है।

दूसरा कारण इसकी कास्टिंग है । जेठालाल का किरदार निभाने वाले दिलिप जोशी, सबसे पुराने कलाकार हैं। दिलीप जोशी शो का सबसे पॉपुलर चेहरा है। तारक मेहता का उल्टा चश्मा की इमेज काफी साफ सुथरी है। इस शो में समाज के हित से जुड़ी कहानियों को कॉमेडी रूप में पेश किया जाता है। पारिवारिक धारावाहिक होने के कारण बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सभी देखना पसंद करते हैं।
नीला फिल्म प्रोडक्शन लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत इस धारावहिक के खाते में कई उपलब्धियाँ भी शामिल हैं। जैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, ने इस शो के माध्यम से स्वच्छता अभियान मुहिम से जोड़कर इसे एक अलग स्तर तक पहुंचाया। उदाहरण स्वरूप हम धारावाहिक एक एपिसोड की बात करें जो कि 'स्वच्छ भारत अभियान' से संबंधित

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था इसमें आदरणीय चाचा जी सुबह-सुबह गोकुलधाम वासियों को सोसाइटी कंपाउंड में बताते हैं और उन्हें अपने-अपने घरों के डस्टबिन भी साथ लाने को कहते हैं उन सभी को अपने-अपने घरों के डस्टबिन इस्तेमाल करने से मना करते हैं और उनकी जगह उन्हें लाल,नीले, हरे रंग के डस्टबिन इस्तेमाल करने को कहते हैं हरे डस्टबिन में गीला कचरा यानी जो कचरा रसोई घर से निकलता है जैसे सब्जियों के छिलके, सड़े हुए फल आदि, नीले डस्टबिन में सूखा कचरा यानी कागज, प्लास्टिक की बोतल आदि और लाल डस्टबिन में अस्वीकार्य कचरा डालना है यानी पुरानी प्लेट, घर में झाड़ू लगाते समय जो कचरा निकलता है आदि गोकुलधाम वासियों के साथ हम सभी को लाल,हरे, नीले डस्टबिन इस्तेमाल क्यों करते हैं? इसकी जानकारी दी गई और कैसे करते हैं ?इसकी भी जानकारी दी गई इसके प्रति सभी को जागरूक किया ।

दूसरा उदाहरण 'स्वच्छ भारत अभियान' से संबंधित है जब गोकुलधाम निवासी निर्णय लेते हैं कि दिवाली से पहले वह अपने घरों की और पूरे सोसाइटी कंपाउंड और क्लब हाउस की सफाई स्वयं करेंगे अगले ही दिन सब सुबह-सुबह सोसाइटी कंपाउंड में एकत्रित होते हैं सब सोसायटी का एक-एक कोना बांट लेते हैं और सोसाइटी की सफाई करते हैं इसी प्रकार दिवाली से पहले सब सोसाइटी की सफाई किसी और से ना करवा कर स्वयं करते हैं उसे गोकुलधाम वासियों के आत्मनिर्भर होने का प्रमाण तो मिलता ही है साथ ही साथ पैसों की बचत भी की गई पानी बचाओ और बेटी बचाओ, शिक्षा अभियान, जैसे कई मुद्दों को भी इस शो में दिखाया गया है।

गोकुलधाम सोसाइटी में हमें हमारे देश की समेकित भारतीय संस्कृति की झलक अलग अलग वेशभूषा, भाषा, त्यौहार और खानपान के रूप में देखने को मिलती है। गोकुलधाम सोसाइटी में सभी त्योहारों को मिलजुल कर मनाया जाता है जैसे मकर संक्रांति,गणेश चतुर्थी, दीपावली, नवरात्री, होली, ईद, क्रिसमस आदि। त्यौहार का रिश्ता किसी धर्म या जाति के साथ यहां नहीं जुड़ा है वो तो बस प्रेम और परिवार के साथ जुड़ा है ।
इस धारावाहिक का एक और लोकप्रिय पात्र दया बेन है।वह जब भी खुश होती है तब गरबा करती है व सबका मन खुश कर देती है।

एक-जुटता, प्रेम और निस्वार्थ भाव ही इस कार्यक्रम को अन्य प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों से अलग बनाती है तथा पसंदीदा कार्यक्रमों की श्रेणी में रखती है।
इस धारावाहिक में हमें मिनी इंडिया की झलक भी देखने को मिलती है जिस प्रकार सभी गोकुलधाम निवासी हर एक त्यौहार को अपना समझ कर मिलजुल कर मनाते हैं वह हमें एक साथ मिलकर रहने को प्रेरित करता हैं ।जैसे एक एपिसोड में हम देखे तो गणतंत्र दिवस 2021 हर साल की तरह ही इस साल भी गोकुलधाम में एक साथ मनाया गया और 'थीम' के तौर पर निर्णय लेते हैं कि सभी गोकुलधाम निवासी भारत के जिस प्रांत से आए हैं वहां की वेशभूषा पहनकर आएंगे। गोकुलधाम की महिला मंडल रात भर जाग कर एक रंगोली भी बनाती है, जिसमें भारत देश के नक्शे के अंदर पंजाब का लोकनाट्य- भांगड़ा, दक्षिण भारत के डोसा इडली, गुजरात का दृश्य आदि चीजें बनाई और साथ ही 'वसुदेव कुटुंबकम' आदि नारे लिखे। अगले दिन यानी 26 जनवरी, सभी गोकुलधाम निवासी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सोसायटी में अपने-अपने प्रांत की वेशभूषा पहनकर एकत्रित होते हैं सब बड़ी खूबसूरती से अपने-अपने प्रांतों की संस्कृति को दर्शाते हैं । सोढ़ी पंजाबी कुर्ता पहनता है, भिड़े मराठी, जेठालाल-गुजराती, तारक मेहता- राजस्थानी, टपु हिमाचली वेशभूषा पहनता है और सोनू कश्मीरी। इस बात से यह सिद्ध हो जाता है कि

'जब भी देखो इनको तो भारत दर्शन हो जाता है।
ये है गोकुलधाम अपना मिनी इंडिया।,

हमारे इस मिनी इंडिया में ना सिर्फ़ अपना ख्याल रखते हैं बल्कि सभी का ख्याल रखते हैं एक और एपिसोड में जब सबने अपने घरों को एक नया रूप देने का विचार सोचा तब उन्होंने वहाँ काम करने आएं लोगों के बारे में भी सोचा और उनके खाने-पीने तथा रहने की व्यवस्था भी की । जेठालाल गड़ा इलेक्ट्रानिक पर काम करने वाले लोगों का भी पूरा ध्यान रखते हैं तथा नट्टू काका और बाघा को अपने परिवार का ही हिस्सा मानते हैं तथा जरूरत पड़ने पर उनके साथ खड़े रहते हैं।
अगर गोकुलधाम के सभी पुरुष दिन में एक बार भी नही मिल पाते तब वह अब्दुल की दुकान पर सोङा पीने के बहाने से मिलते है अथवा दिनचर्या का वर्णन करते है कुछ समय आपस मे बीताने के बाद वह सब अपने घर चले जाते है । इन सभी संकेतों से हम यह कह सकते है कि गोकुलधाम सोसायटी के आपस का प्यार,दया, चिंताभाव उन्हें एक-दूसरे के प्रति आदर दिखाती है और इसी कारण से इस कार्यक्रम को टॉप पाँच मे शामिल करता है तारक महेता का उल्टा चशमा ने 3000 से भी ऊपर धारावाहिक बना लिए है और साथ ही साथ इस कार्यक्रम ने गिनिज वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बनाया है।

इस धारावाहिक के प्रति लोगों का प्यार बढ़ता ही जा रहा है पिछले 18 वर्षों से यह धारावाहिक की लोकप्रियता कहीं हद तक बढ़ी है
तारक मेहता का उल्टा चश्मा धारावाहिक भारत में प्रसिद्ध वह लोकप्रिय नाटक है यह तो सभी जानते हैं। और इसकी प्रसिद्धि का कारण इसके कलाकार वह इसके लेखक हैं जिन्होंने यह धारावाहिक से आम जनता को बहुत प्रभावित वह मनोरंजन किया है और अब तक भी करते आ रहे हैं ।इस धारावाहिक में देखा गया है कि यहां लोग अलग-अलग जाति वह धर्म के होने के बावजूद भी एक साथ रहते हैं वह सभी के त्योहारों को एक साथ मनाते हैं बिना किसी भेदभाव वह आडंबर से परे होकर सभी के त्योहारों को उतना ही आदर व सम्मान देते हैं जितना अपने रीति-रिवाजों को देते हैं इस सोसाइटी में एक बात तो अच्छी है कि यहां कोई किसी का धर्म नहीं देता ना उसकी जाति पूछता है बस यहां पर इंसानियत देखी जाती है जो कि हमको प्रभावित करती है इस धारावाहिक की सबसे अच्छी बात है कि यहां सभी लोग एक दूसरे के त्योहारों को इतने उत्साह पूर्व वे प्रसन्नता के साथ मनाते हैं जैसा हर त्योहार उन का त्योहार है। चाहे वह हिंदू हो या मुस्लिम या पंजाबी या सीख सभी अलग-अलग जाति के होने के बाद भी एक दूसरे के त्योहारों का आदर देते हैं वह उनको मिलकर मनाते हैं यहां तक कि इस धारावाहिक में छोटे भारत की भी झलक दिखाई देती है जैसे भारत में अलग-अलग जाति वह धर्म के लोग एक साथ रहते हैं वैसे ही इस

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सोसाइटी में सभी लोग एक साथ रहते हैं।जैसे की जेठालाल का परिवार जो गुजराती है और गुजरात में ज्यादातर नवरात्रि वह मकर संक्रांति त्योहार मनाया जाता है वही भिड़े जो मराठी है और महाराष्ट्र में गणेश उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जाता है ,सोढ़ी जो पंजाबी है और पंजाब में लोहरी का त्यौहार मनाया जाता है और अय्यर जो मद्रासी है और मद्रास में पोंगल मनाया जाता है आदि। अलग-अलग जाति के होने के बाद भी यह लोग एक दूसरे के रीति-रिवाजों का आदर करते हैं वे सभी के त्योहारों को इस तरह मनाते हैं जैसे कि एक परिवार हो उदाहरण के तौर पर जब ईद का त्योहार होता है तो अब्दुल अकेला होता है। तब उसे अपने परिवार की याद आती है कि अगर वह होते तो उनके साथ ईद का त्योहार मनाता। अपने परिवार के लोग के साथ समय बिताता और सेवइयां खाता। तभी वहां पर सभी सोसाइटी के लोग उसके पास आते हैं और उसके साथ शामिल हो जाते हैं। वह उसके साथ ईद का त्यौहार मनाते हैं ।वह सभी मिलकर सेवइयां बना कर मिलकर खाते हैं। एक परिवार की तरह त्योहार मनाते हैं। इस धारावाहिक में यह तो देखा है कि चाहे कोई सा भी त्यौहार हो सब लोग एक साथ मिलकर उसे मनाते है और यह हमें सबसे ज्यादा प्रभावित करती है आज जब जाति व धर्म के नाम पर लोगों को बांटा जा रहा है यह धारावाहिक उन लोगों के लिए एक सिख है किसी भी धर्म के हो उन्हें रीति -रिवाज और त्योहारों का अनादर नहीं करना चाहिए बल्कि उसे मिलकर मनाना चाहिए जैसे इस धारावाहिक में हम देखते हैं।

इस धारावाहिक की सफलता का प्रमुख कारण इसमें दिखाई गई भारतीय समेकित संस्कृति है।

जो परिवार लोगों को सबसे अधिक प्रिय है वह गड़ा परिवार है कारण हम सभी जानते हैं कि जेठालाल गड़ा इस धारावाहिक के मुख्य पात्र हैं l इस परिवार का हर सदस्य अपने आप में ही एक प्रेरणा का स्रोत है यही कारण है कि 46.1% जनता को गड़ा परिवार सबसे अधिक प्रभावित करता है l अगर हम बात करें जनता के अनुसार इस धारावाहिक के लोकप्रिय पात्र की तो वह है जेठालाल गड़ा जिन्हें 34.5% लोगों को प्रभावित किया है l जेठालाल चंपकलाल गड़ा एक व्यापारी है जो देर से उठता है और जलेबी-फाफड़ा का शौकीन है l इस धारावाहिक में दर्शाई गई अधिकतर समस्याएं इन्हीं के साथ होती हैं और उन्हें घर में भी लोग परेशान करते रहते हैं जैसे कभी इनका शरारती बेटा टप्पू, कभी उनके साथ सुंदर दुकान के कामों की वजह से भी परेशान रहते हैं दुकान पर इनके साथ काम कर रहे नटू काका और बाघा इन्हें पगार बढ़ाने को लगातार बोलते रहते हैं
उनकी पत्नी दया भी लोगों को कोई कम प्रिय नहीं है 26.8% लोग दया से प्रभावित हैंl दया अपने गरबे की वजह से लोगों के दिलों पर छाई हुई है साथ ही साथ वह एक कुशल गृहणी भी है जो गोकुलधाम परिवार में सबसे स्वादिष्ट खाना बनाती है और हंसमुख हैl अगर हम बात करें अगले पसंदीदा पात्र की तो वह है स्वयं तारक मेहता जो जेठालाल के 'फायर ब्रिगेड' हैl जेठालाल के परम मित्र हैं जो हर समस्या के समय जेठालाल का साथ देते हैंl यह पेशे से लेखक हैंl
गोकुलधाम परिवार में हर सदस्य मिल-जुलकर रहता है यहां की टप्पू सेना बच्चों में बहुत प्रिय है यह बच्चों की पलटन शरारती तो है पर साथ ही साथ बहुत समझदार भी है चंपकलाल गड़ा(चाचा जी) इस सोसाइटी के बुजुर्ग

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सदस्य हैं जो जेठालाल के पिता है उन्हें सोसाइटी में सभी चाचा जी कहकर पुकारते हैं और इन्हें सभी बहुत ही प्रेम, आदर-सम्मान देते हैं चाचा जी अपने नैतिक मूल्यों को भली-भांति समझते हैं और यह हमें अधिक प्रेरित करते हैं इस धारावाहिक के माध्यम से चाचा जी जो खुद तो ईमानदार है ही साथ ही दूसरों को भी सच्चाई की राह पर चलने को प्रेरित करते हैं उदाहरण के तौर पर देखे तो एक बार एक युवक जो सड़क पर गंदगी फैला रहा था और दूसरों से बात करते समय अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहा था और जिसने चाचा जी के साथ भी बुरा बर्ताव किया, अंत में चाचा जी के पास ही लौट कर आता है और उनसे माफी मांगता है चाचा जी उसे माफ कर देते हैं और उसकी मदद भी करते हैं चाचा जी गांधी जी से अधिक प्रभावित है यह बात हमें इस घटना के द्वारा पता चल जाती है कि दुश्मन के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए हमें इसे समझना चाहिए कि जो वह कर रहा है वह गलत है और उसे एक अच्छा इंसान बनने को प्रेरित करना चाहिए उदाहरणतः धारावाहिक के एक एपिसोड जो गांधीवाद पर आधारित है कि शुरुआत कहां से होती है जहां पर बापूजी चरखे पर ढके कपड़े को बताते हैं ।वहां उपस्थित सभी लोग का मन मोह लेते हैं तब बापूजी कहते हैं "यह चरखा एक एक धागे को जोड़कर एक पूरा कपड़ा बनाता है वैसे ही बापू ने एक-एक कर पूरे भारत देश को एक किया है "।गांधी बाबू चाहते थे कि हर घर से चरखी का संगीत सुनाई दे तभी गोलू पूछता है कि इस चरखी का क्या महत्व है तब बापूजी बताते हैं स्वालंबन आत्म निर्भर प्रतीक है यह आर्थिक रूप से तंत्र होने का साधन है । यह एक ऐसी चीज है जो किसी भी जाति का वर्ग का व्यक्ति चला सकता है और यह स्वतंत्र की चीज है तभी तारक मेहता मुकुटधर पांडे जी की पंक्तियां कहते हैं "स्थिति प्रज्ञा है तपस्वी त्यागी है अनाज सत्य है भक्त व्यक्ति राग है अहिंसा के साधक है ऐसी राम-राम है महाराजा ब्रेड विश्वासी तुम क्षमता का संदेश दिखाने आए तुम भूले भटके को मार्ग दिखाने आए तुम अर्श पुला की बर्बरता दुर्बल आंधी मत्सेना दुबे सका हे गांधी"। फिर चाचा जी चरखे को कैसे चलाते हैं वह बताते हैं इस चलते ने बदलाव लाने की तरह लाने की एक उमंग को जगाया फिर वह सब मिलकर गांधी जी का प्रिय गीत "रघुपति राघव राजा राम पावन सीताराम" का गीत गाते हैं ।इसी तरह वह यह संदेश देते हैं गांधी द्वारा दिए गए सिद्धांत एवं उनके बताए मार्ग पर चलने से हम आत्म निर्भर हो सकते हैं।

प्रस्तुत धारावाहिक से हमें यह आभास हुआ कि इस धारावाहिक की सफलता का कारण हम केवल किसी एक किरदार को नहीं मान सकते हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति अर्थात बुज़ुर्ग, युवा, स्त्री, पुरुष एवं बच्चे सभी से गूगल फॉर्म के द्वारा किये गए एक सर्वेक्षण में अधिकतर जनों ने सभी किरदारों को ही धारावाहिक की सफलता का पात्र कहा है। अतः हम भी यही मानते हैं क्युकी हमारा देश एक ऐसा देश है जहाँ अनेकता को ही एकता कहा गया है और इसलिए यह धारावाहिक इस कथन की एक मिसाल है। यहाँ पर हम प्रत्येक एपिसोड में देखते हैं कि बात चाहे जो हो, वक़्त चाहे जो हो, किंतु इन किरदारों की एकता पर कभी प्रभाव नहीँ पड़ता। चाहे कोई भी त्योहार हो, गुजराती हो, तमिल हो, बंगाली हो, वे सभी एक साथ मिलकर बड़े ही प्रेम के साथ अपनी खुशियाँ बांटते हैं। यह बात हमें यह उदाहरण पेश करती है की हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और यह तो हमारे सभी बड़ों का भी कहना है कि यदि हम स्वयं को तोड़ कर कार्य करेंगे तो कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता। और यदि होता है तो उसे इतने बेहतर नहीं किया जा सकता जितना हम सभी अर्थात एक टीम मिल कर सकती है। इसी प्रकार प्रस्तुत धरवाहिक हमारे समक्ष अनेकता में एकता की एक मिसाल पेश करता है यह बात हमारे समक्ष यह उदाहरण प्रस्तुत करती है की हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश है।

और यह तो हमारे सभी बड़ों का भी कहना है कि यदि हम स्वयं को तोड़ कर कार्य करेंगे तो कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता। और यदि होता है तो उसे इतने बेहतर नहीं किया जा सकता जितना हम सभी अर्थात एक टीम मिल कर सकती है। इसी प्रकार प्रस्तुत धरवाहिक हमारे समक्ष अनेकता में एकता की एक मिसाल पेश करता है।

अनेक एपिसोड में हम देखते हैं कि कार्य चाहे जो भी हो, उसमें सहभागिता सभी की होती है, चाहे वह टप्पू सेना के चटकीले मंसूबे हों, और चाहे दया का गुजराती जलेबी और फाफड़ा। अनेक समस्यायों के दौरान भी यह देखने को मिलता है उस समस्या का निजात भी सभी मिलकर ही निकालते है। इसमे एक बड़ा हाथ टप्पू सेना का होता है। वे सभी ऐसा निजात निकालते हैं जो एक दम सटीक होता है, और उसमे एक हास्य अंदाज़ डालने का कार्य करते है बाकी सभी किरदार जो कि मूलतः टप्पू सेना के माता पिता की भूमिका निभा रहे हैं, जेठालाल, भिड़े, हाथी भाई आदि।

इसी प्रकार प्रस्तुत धारावाहिक को आज इन उंचाइओ तक ले जाने मे न केवल कोई एक नहीं बल्कि सभी किरादरों की अहम भूमिका रही है।

अंततः इन सभी घटनाओ को देखते हुए हम यह मानते हैं कि धारावाहिक पूर्णतः हमारे समक्ष अनेकता मे एकता की मिसाल प्रस्तुत करता है।

इस धारावाहिक की सफलता का प्रमुख कारण है भारतीय समेकित संस्कृति इस जो धारावाहिक में दिखाई गई है। हमें इस धारावाहिक में 'मिनी इंडिया' की झलक देखने को मिलती है । अनेकता में एकता इस धारावाहिक का प्राण है सब त्योहारों को मिलजुल कर मनाना और समस्या के समय कंधे से कंधा मिलाकर चलना हमें एकता की ओर बढ़ने को प्रेरित करता है यह धारावाहिक हमें हंसते-हंसते हम सब के भीतर एक ऐसा संदेश छोड़ जाता है जिसे हम भुला नहीं सकते । हास्य शैली के माध्यम से ही यह धारावाहिक हम सब को जागरूक और सजग कर देता है कि देश-समाज में क्या हो रहा है टीवी पर यह ही एकमात्र धारावाहिक है जिसका हर पात्र अपने आप में अतरंगी है और उसके सभी रंग दर्शकों को छू लेते हैं और यही कारण है कि इसकी लोकप्रियता बढ़ती ही चली गई और आज भी लोकप्रिय धारावाहिक बना हुआ है।

संदर्भ

संस्कृति क्या है? (विष्णु प्रभाकर) पृष्ठ संख्या ६७

https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF_%E0%A4%95%E0%A5%87_%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0_%E0%A4%85%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AF

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

https://khabar.ndtv.com/news/blogs/ravish-kumar-writes-about-dinkars-book-sanskriti-ke-chaar-adhyaye-765114
https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/2502
https://www.goodreads.com/book/show/27858394
https://amp.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF_%E0%A4%95%E0%A5%87_%E0%A4%A4%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B5_-%E0%A4%A1%E0%A5%89._%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%A8_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6
https://www.jankipul.com/2014/09/blog-post_3-6-2.html
https://www.drishtiias.com/hindi/mains/model-essays/unique-form-of-indian-culture
https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%95%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF
M.Jagranjosh.com
Www.naidunia.com
Knowindia.gov.in
http://Knowindia.gov.in
https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/4947/Bhartiya+Sanskriti+Ka+Sanshipt+Itihas
hi.wikipedia.org.
hindi.sarang.com
bharat.discovery.org

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies